

शिव आरम्भणा

वर्ष: 5, अंक: 01

RNI: RJHIN/ 2013/ 53539

अन्दर में महाशिवारात्रि विशेषांक जल्लर पढ़ें

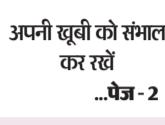
हिन्दी (मासिक), - 2017, जनवरी सिरोही, पृष्ठ: 4, मूल्य: 7.50 रुपये



स्वयं को पहचानने से होगी अनभूति



...पेज - 2

अपनी खूबी को संभाल
कर रहेसंत सम्मेलन में जुटे देश के संत, आद्यात्मिकता का आहान
...पेज - 3बीके कोमल को राजीव गांधी एवं सीलेन्स अवार्ड का समान
...पेज - 3आंतरिक और बाह्य प्रकृति के जुड़ने से ग्लोबल वैलंस
...पेज - 4तंदन के साथ हॉल में आद्यात्मिक कार्यक्रम
...पेज - 4

48वां दिव्य पुण्य स्मृति दिवस : संस्था के साकार संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का 18 जनवरी को हुए थे अत्यवत विश्व शांति के महानायक 'प्रजापिता ब्रह्मा बाबा'

इस दुनिया में कुछ लोग इतिहास बनाते हैं तो कुछ जाते हैं। वह अपने पीछे ऐसे निशान छोड़ जाते हैं जो करोड़ों लोगों के लिए मार्गदर्शक, पथप्रदर्शक और प्रेरणास्रोत बन जाते हैं। ऐसे महान, तपस्वी, पुण्यात्मा, दिव्यगुणों से संपन्न, नई दुनिया के आधार स्तम्भ बने प्रजापिता ब्रह्मा बाबा। जिन्हे स्वयं परमपिता शिव परमात्मा ने अपना आधार स्तम्भ बनाया, उनके शरीर रुपी रथ का उपयोग किया। साथ ही सुषिट के नवनिर्माण की आधारशिला रखी। आइए जानते हैं दादा लेखराज कैसे बने प्रजापिता ब्रह्मा और विश्व शांति के महानायक।

शिव आमंत्रण ■ माउण्ट आबू

उसके बाद उनकी पालना चाचा ने की। चाचा एक व्यापारी थे। इस कहते हैं पूर्ति के लक्षण पालने में ही दिखाई देते हैं। सन् 1876 में सिध्ध के लेखराज को एक बालक का जन्म हुआ। जिसका नाम रवा गया लेखराज में एक बालक का जन्म हुआ। जिसका नाम रवा गया लेखराज भी व्यापार में चाचा के साथ थिया था। वहाँ कोई गरीब ग्राहक आ जाता तो उसे मुफ्त में भी गेहूं देते थे। जिसके स्थापना के कार्य में युगुरुष की भूमिका भूमिका आयी।

सामान्य व्यापारी से बने प्रसिद्ध जौहरी

उसके बाद उनकी पालना चाचा ने की। चाचा एक व्यापारी थे। इस कहते हैं वह लेखराज को एक बालक का जन्म हुआ। जिसके हाती थी और रात भी में खूब तोहने वाले थे। वहाँ कोई गरीब ग्राहक आ जाता तो उसे मुफ्त में भी गेहूं देते थे। जिसके चलते उन्हें कई बार चाचा की डांट भी खानी पड़ जाती थी।

लेखराज के माता-पिता